Su Mo Tu We Th Fr Sa

Date: / /

History

Lecture NO - 34

BY

Dr. Komal (Guest Professor)
SNSRKS College

B.A Part - 2nd

Paper - III. 3rd

अलाउद्दीन खिलजी

(आर्थिक सुधार)

Scanned with CamScanner

Q अल्लाउद्दीन खिलजी के आर्थिक सुधारों का वर्णन करें।

Ans:- दिल्ली सल्तनत की भूमि कर व्यवस्था का इतिहास अल्लाउद्दीन के काल से प्रारंभ होता है। इसमें अल्लाउद्दीन का उद्देश्य जमीन्दारों को गरीब बनाकर कृषकों की श्रेणी में लाना था। क्योंकि सुल्तान का विश्वास था कि जिन लोगों के पास अतुल सम्पत्ति रहती है वे विद्रोह करने लगते हैं। उस समय हिन्दु जमींदार वर्ग सम्पन्न था। डॉ० मोरलैण्ड के अनुसार उस समय भारतीय समाज में दो नहीं तीन वर्ग थे और ये तीनों वर्ग उतने ही धनी थे जितना कि मुस्लिम जमींदार वर्ग। स्वयं सुल्तान ने कहा था कि 'खुत व मुकदम और चौधरी खराज। जजिया करी चराई में से कोई भी कर नहीं देते थे।' धन की अधिकता के कारण ये शक्तिशाली बन गये।

अपनी भूमि कर व्यवस्था के द्वारा अलाउद्दीन ने इनकी शक्ति नष्ट करने का प्रयास किया। जिससे विद्रोह शब्द उनके मुंह से निकल सके। सुल्तान ने एक अलग Revenue Department बनवाया जिसका अध्यक्ष नायब वजीर शर्फ कामिनी को बनाया।

कर व्यवस्था के कार्य :-

भूमि की नपाई :-

अलाउद्दीन पहला मुस्लिम शासक था। जिसने भूमि की वास्तविक नाप पर राजस्व निश्चित किया। यद्यपि दक्षिणी भारत के हिन्दु राजाओं को यह पद्धति ज्ञात थी। परंतु उत्तरी भारत में यह कार्य नया ही था। अबुल फजल के समान योग्य न होने के कारण अपनी मापन

Su Mo Tu We Th Fr Sa

Date: / /

की पद्धति एवं उसके उपकरणों के संदर्भ में विस्तृत सूचना नहीं देता। बरनी केवल यह कहता है कि लगान का आधार बिस्वा था। परंतु यह नपाई केरल तथा पश्चिम के कुछ प्रांतों में जैसे पंजाब, दोआबा, मालवा एवं राजपुताना के कुछ भाग में ही कराई गई थी।

2. कर की दर :-

सुल्तान ने उपज का 50% भूमि-कर (खराज) निश्चित किया। लगान के रूप में कर लेना ही अधिक पसंद करता था। कर अधिक था, परंतु असंवैधानिक नहीं क्योंकि इस्लामी कानून के अनुसार राज्य के अधिकतम हिस्से के रूप में उपज का 50% लेने की अनुमति है।

(i) आवास कर एंव चराई कर :-

भूमि कर के अलावा सरकार गृह कर एंव चारायी कर भी लेती थी। सारे दुधारू पशुओं जैसे गाय, बकरियां आदि पर कर लगाया जाता था। फरिश्ता के अनुसार "चार बैल, 2 भैंसे 2 गायें और दस बकरियां कर से मुक्त थी।"

(ii) जजिया :-

Dr. tripathi के अनुसार जजिया कर नही लगाया गया था परंतु इसका श्रोत कोई ठोस आधार नही है। सुलतान ने स्वय कहा था कि जमीदार लोग खराज, जजिया, करी या चराई में से कोई भी नही देते थे अतः स्पष्ट होता है कि जजिया भी लगाया गया था।

(iii) खम्स :-

Scanned with CamScanner

यह खेहाद की भाट मे राज्य का 1/5 हिस्सा था। लेकिन सुल्तान कुंकी लोगों की समृद्धि से घृणा करता था।

(iii) ज़कात :- यह मुसलमानों से लिया जाने वाला धार्मिक कर था।

③ भ्रष्टाचार रोकने का प्रयत्न :-

भ्रष्टाचार को रोकने के लिये एक नये विभाग की स्थापना की गई जिसे दिवान -ए- मुस्तखराज कहते थे। इसको राजस्व एकत्रित करने का कार्य सौंपा गया। पटवारियों तथा कर्मचारियों मे भ्रष्टाचार समाप्त करने के लिये भी कठोर उपाय अपनाये गये। सुल्तान ने उनका वेतन भी बढ़ा के दिया। परंतु जिन लोगों की शिकायत बिच चूस लेने

मिलती थी उन्हें कठोर से कठोर दण्ड भी दिया जाने लगा। जिससे स्थिति सुधारने में सफलता मिली।

④ आनाज का बाजार :-

5 अन्नागार

⑥ राशनिंग

निष्कर्षतः उपर्युक्त तथ्यों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अलाउद्दीन खिलजी ने आर्थिक सुधार को सुदृढ़ बनाये के लिये बहुत से बड़े बड़े कार्य किये ताकि व्यवस्था पर प्रभाव पड़े परन्तु उनकी कठोरता भरे नियमों से उन्होंने काफी हद तक सफल भी रहे और कुशल सेना खड़े करने में सक्षम भी हुये। अलाउद्दीन देश तथा विदेश मे कभी भी पराजय का मुख नहीं देखे।